

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का कर्ता होय ।  
 ऐसी मिथ्याबुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय ॥  
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥२॥  
 लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार ।  
 पर दुःखमय गति चतुर में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार ॥  
 यातैं नाशादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥३॥  
 अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरशाय ।  
 जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय ॥  
 यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥४॥

(५)

आओ जिन मंदिर में आओ,  
 श्री जिनवर के दर्शन पाओ ।  
 जिन शासन की महिमा गाओ,  
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥टेक॥  
 हे जिनवर तव शरण में, सेवक आया आज ।  
 शिवपुर पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज ॥  
 प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ,  
 चहुँगति दुःख से शीघ्र छुड़ाओ ।  
 दिव्य-ध्वनि अमृत बरसाओ ।  
 आया-प्यासा मैं सेवक आनन्द का ॥१॥  
 जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय ।  
 मोहमहातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय ॥  
 शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ ।  
 निर्मल भेद-ज्ञान प्रकटाओ ।  
 अब विषयों से चित्त हटाओ,  
 पाओ-पाओ रे मारग निर्वाण का ॥२॥

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धातम को जान ।  
 निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान ॥  
 नव केवल लब्धि प्रकटाओ,  
 फिर योगों को नष्ट कराओ ।  
 अविनाशी सिद्ध पद को पाओ,  
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥३॥

(६)

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है ।  
 सिद्धों का दरबार है ये सिद्धों का दरबार है ॥टेक॥  
 खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं ।  
 दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है ।  
 चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है ॥१॥  
 भक्ति से नृत्य-गान कोई है कर रहे ।  
 आतम सुबोध कर पापों से डर रहे ॥  
 पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है ॥२॥  
 जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है ।  
 छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है ॥  
 देख लो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्ति द्वार है ॥३॥

(७)

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले ।  
 तुझ ही में डोले, हाँ तुझ ही में डोले ।  
 मन की तू घुंडी को खोल, खोल-खोल-खोल ।  
 तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥टेक॥  
 क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी,  
 घट ही में है तेरे, घट-घट का वासी ।  
 अन्तर का कोना टटोल, टोल-टोल-टोल ॥१॥